International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

ब्रह्मसूत्र शांकरभाष्य में श्रुति

रीता जियाल,शोधछात्रा
दिल्ली विश्वविद्यालय
संस्कृत विभाग

शोध सार

भारतीय चिन्तन परम्परा के महानतम विद्वानों में से एक आदि शंकराचार्य ने भी उपनिषद् को श्रुति अर्थात् शब्द प्रमाण माना है। आदि शंकराचार्य के मत में श्रुति अद्वैत वेदान्त दर्शन में श्रुति को विशेष और स्वतन्त्र ज्ञान का स्रोत माना है।

आचार्य शंकर के अनुसार

श्रुत्यार्थको तथावत् ग्रहणन करने में तथा वेदानुकूल साहित्य की प्रमाण्य अस्वीकृति में महान् दोष हैं।'धर्माधर्म के विषय में वेद जिस प्रकार परम प्रमाण स्वीकृत हैं। उसी प्रकार ब्रह्म के सम्बन्ध में भी उनका प्रमाण्य सर्वोपरि है। ' प्रत्यक्षादि प्रमाण भी जिस धर्म के प्रकाशन में असमर्थ हैं,श्रुति उसकी भी प्रकाशक है।आचार्य शंकर के अनुसार शास्त्र (श्रुति) विहित कुछ भी अकर्तव्य नहीं है ,क्योंकि शास्त्र तो परतत्पर प्रमाण्य है।श्रुतियों के महावाक्यों से भी आत्मा और ब्रह्म के स्वरूप का ज्ञान होता है। ये महावाक्य हैं- प्रज्ञानं ब्रह्म (ऐतरेयोपनिषद्),अहं ब्रह्मास्मि (बृहदा. उप.) ,तत्त्वमसि (छांदोग्य उप.) ,अयमात्मा ब्रह्म (माण्डूक्य उप.)। धर्म और अधर्म का बोध भी श्रुति द्वारा ही प्राप्त होता है। श्रुति के अतिरिक्त धर्माधर्म का ज्ञान किसी दूसरी वस्तु से नहीं हो सकता है।

आचार्य शंकर का मानना है कि श्रुति नित्य है लेकिन प्रत्येक युगारम्भ में यह पुनः प्रट होती है। इसके पक्ष में निम्नलिखित प्रमाण दिए जा सकते हैं श्रुति नित्य है क्योंकि यह जगत्कारण है।11 ब्रह्म ने 'भू' शब्द का व्याहार करते हुए भूमि का सृजन किया। 12 श्रुति नित्य है क्योंकि शब्द से जाति और आकृति का ज्ञान होता है न कि व्यक्ति का।

आचार्य शंकर सदा ही पक्षधर श्रुत्यानुगत ,तर्कानुगत एवं शिष्ठकर्मठता को विशिष्ठा प्रदान करते रहे हैं। पारमार्थिक सत्ता के अन्तर्गत निर्गुण ब्रह्मा के आकार का चिन्तन करते हैं। श्रुति

मेंने इस जगत की उत्पति ,स्थिति और लय का विषय दिया ठीक उसी प्रकार से वही जन्म स्थिति और लय कहे जाते हैं। श्रुति का कथन हैं ,अनुमान में व्याप्ति दो द्रष्ट वस्तुओं के मध्य स्थित हैं। ईश्वर को अनुमान से सिद्ध नही किया जा सकता।

आचार्य शंकर की दृष्टि में ब्रह्म ही एकमात्र परमार्थ सत्य है ,शेष समस्त जगत् समस्त लोक उसी में अधिष्ठित हैं। अतः शुभ्वादि का आयतन (आश्रय) भी ब्रह्म है। इस पर अनेक श्रुतियां भी प्रमाण है। ओंकार एवेदं सर्वम्।छांदोग्य उपनिषद्हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः।" क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन दृष्टे परावरे मु उप)

प्रस्तुत शोध पत्र में आचार्य शंकर के मत में श्रुति प्रमाण ,श्रुति के महावाक्यों के द्वारा आत्मा ओर ब्रह्म का ज्ञयान तथा आचार्य शंकर की दृष्टि में ब्रह्म इत्यादी विषयो पर इस शोध पत्र में विस्तृत रूप से व्यख्या की गयी है

प्रस्तावना

(व्याकुर्वन् व्याससूत्रार्थं श्रुतेर यथोचिवान्।श्रुतेय: स एवार्थ : शंकर : सवितानन :)।। (शिवपुराण- रुद्रखण्ड ७.१):- " सूर्यसदृश प्रतापी श्री शिवावतार आचार्य शंकर श्री बादरायण- वेदव्यासविरचित ब्रह्मसूत्रों पर श्रुतिसम्मत युक्तियुक्त भाष्य संरचना करते हैं। (अष्टवर्षेचतुर्वेदी,द्वादशेसर्वशास्त्रवित् षोडशेकृतवान्भाष्यम्द्वात्रिंशेमुनिरभ्यगात्)

आठ वर्ष की आयु में चारों वेदों में निष्णात हो गए ,बारह वर्ष की आयु में सभी शास्त्रों में पारंगत,सोलह वर्ष की आयु में शांकरभाष्य तथा बत्तीस वर्ष की आयु में शरीर त्याग दिया। ब्रह्मसूत्र के ऊपर शांकरभाष्य की रचना कर विश्व को एक सूत्र में बांधने का प्रयास भी शंकराचार्य के द्वारा किया गया है ,जो कि सामान्य मानव से सम्भव नहीं है। शंकराचार्य के दर्शन में सगुण ब्रह्म तथा निर्गुण ब्रह्म दोनों का हम दर्शन कर सकते हैं। निर्गुण ब्रह्म उनका निराकार ईश्वर है तथा सगुण ब्रह्म साकार ईश्वर है। जीव अज्ञान व्यष्टि की उपाधि से युक्त है।(तत्त्वमसि) तुम ही ब्रह्म हो ;(अहं ब्रह्मास्मि) मैं ही ब्रह्म हूं ; ' (अयामात्मा ब्रह्म)' यह आत्मा ही ब्रह्म है ;इन(बृहदारण्यकोपनिषद् तथा छान्दोग्योपनिषद) वाक्यों के द्वारा इस जीवात्मा को निराकार ब्रह्म से अभिन्न स्थापित करने का प्रयत्नशंकराचार्य जी ने किया है। ब्रह्म को जगत् के उत्पत्ति,स्थिति तथा प्रलय का निमित्त कारण बताए हैं। ब्रह्म सत् (त्रिकालाबाधित) नित्य,चैतन्यस्वरूप तथा आनंद स्वरूप है। ऐसा उन्होंने स्वीकार किया है। जीवात्मा को भी

सत् स्वरूप,चैतन्य स्वरूप तथा आनंद स्वरूप स्वीकार किया है। जगत् के स्वरूप को बताते हुए कहते हैं कि-

(नामरूपाभ्यां व्याकृतस्य अनेककर्तृभोक्तृसंयुक्तस्य प्रतिनियत देशकालनिमित्तक्रियाफलाश्रयस्य मनसापि अचिन्त्यरचनारूपस्य जन्मस्थितिभंगंयतः)।

नाम एवं रूप से व्याकृत ,अनेक कर्ता ,अनेक भोक्ता से संयुक्त ,जिसमें देश ,काल,निमित्त और क्रियाफल भी नियत हैं। जिस जगत् की सृष्टि को मन से भी कल्पना नहीं कर सकते ,उस जगत् की उत्पत्ति,स्थिति तथा लय जिससे होता है,उसको ब्रह्म कहते है। आदि शंकराचार्य के मत में श्रुति अद्वैत वेदान्त दर्शन में श्रुति को विशेष और स्वतन्त्र ज्ञान का स्रोत माना है।

आचार्य शंकर के अनुसार

श्रुत्यार्थ को तथावत् ग्रहण न करने में तथा वेदानुकूल साहित्य की प्रामाण्य अस्वीकृति में महान् दोष हैं। ' धर्माधर्म के विषय में वेद जिस प्रकार परम प्रमाण स्वीकृत हैं। उसी प्रकार ब्रह्म के सम्बन्ध में भी उनका प्रामाण्य सर्वोपरि है। ' प्रत्यक्षादि प्रमाण भी जिस धर्म के प्रकाशन में असमर्थ हैं,श्रुति उसकी भी प्रकाशक है।

आचार्य शंकर की दृष्टि में ब्रह्म ही एकमात्र परमार्थ सत्य है ,शेष समस्त जगत् समस्त लोक उसी में अधिष्ठित हैं। अतः शुभ्वादि का आयतन (आश्रय) भी ब्रह्म है। इस पर अनेक श्रुतियां भी प्रमाण है। (ओंकार एवेदं सर्वम्)।(छांदोग्य उपनिषद्)

आचार्य शंकर के मत में श्रुति , श्रुतियों के महावाक्यों से आत्मा और ब्रह्म के ज्ञानका स्वरूप तथा आचार्य शंकर की दृष्टि में ब्रह्म इत्यादी विषयोपर इस शोध पत्र में प्रकाश डाला गया है।

ब्रह्मसूत्र,वेदान्त दर्शन का अधारभूत ग्रन्थ है। इसके रचयिता बादरायण हैं। इसे वेदान्त सूत्र,उत्तर- मीमांसा सूत्र ,शारीरक सूत्र और भिक्षु सूत्र आदि के नामो से भी जाना जाता है। इस पर अनेक भाष्य भी लिखे गये हैं। अपने वर्तमान रूप में इसकी रचना अनुमानत :। 400 से 450 ईसा पश्चात हुई थी। वेदान्त के तीन मुख्य स्तम्भ माने जाते हैं- उपनिषद्,श्रीमद्भगवद्गीता एवं ब्रह्मसूत्र। इन तीनों को प्रस्थानत्रयी कहा जाता है। इसमें उपनिषदों को श्रुति प्रस्थान ,गीता को स्मृति प्रस्थान और ब्रह्मसूत्रों को न्याय प्रस्थान कहते हैं। ब्रह्मसूत्र में चार अध्याय हैं जिनके नाम हैं- समन्वय ,अविरोध,साधन एवं फल। प्रत्येक

अध्याय के चार पाद हैं। कुल मिलाकर इसमें 555 सूत्र हैं। अध्याय ,नाम, सूत्र , संख्या , अधिकरण, संख्या, समन्वय 134 39 अविरोध 157 47 साधन 186 कुल 555 191 भाष्य हैं।

आदि शंकराचार्य:-ये भारत के एक महान दार्शनिक एवं धर्म प्रवर्तक थे उन्होने अद्वैत वेदान्त को ठोस आधार प्रदान किया। भगवद्गीता ,उपनिषदों और वेदांतसूत्रों पर लिखी हुई इनकी टीकाएँ बहुत प्रसिद्ध हैं। उन्होंने सांख्य दर्शन का प्रधानकारणवाद और मीमांसा दर्शन के ज्ञान कर्मसमुच्चयवाद का खण्डन किया। इन्होने भारतवर्ष में चार कोनो में चार मठों की स्थापना की थी जो अभी तक बहुत प्रसिद्ध और पवित्र माने जाते हैं और जिन पर आसीन संन्यासी ' शंकराचार्य ' कहे जाते हैं। वे चारों स्थान ये हैं- (१) ज्योतिष्पीठ बद्रिकाश्रम ,(२) श्रृंगेरी पीठ,(३) द्वारिका शारदा पीठ और (४) पुरी गोवर्धन पीठ। इन्होंने अनेक विधर्मियों को भी अपने धर्म में दिक्षित किया था। ये शंकर के अवतार माने जाते हैं। इन्होंने ब्रह्मसूत्रों की बड़ी ही विषद और रोचक व्याख्या की है।

आदि शंकराचार्य का जन्म दक्षिण भारत के केरल राज्य में स्थित कालडी नामक ग्राम में 788 ईसा में हुआ था। आचार्य शंकर ने समस्त वेदान्त- वाक्यों का अद्वितीय ब्रह्म में समन्वय कर जो ब्रह्मात्मक उपदेश किया वस्तुतः वह प्रत्येक प्राणी के लिए अन्धकार से प्रकाश की ओर जाने को प्रेरित करता है। आज भी जो वैदिक संस्कृति का अवशेष उपलब्ध होता है वह केवल आचार्य शंकर की ही देन है। आचार्य शंकर यह दिव्य लीला 32 वर्ष की आयु में ही समाप्त कर अंतरध्यान हो गये।

(अष्टवर्षे चतुर्वेदी द्वादशे सर्वशास्त्रवित्। पोटशे कृतवान् भाष्यं द्वात्रिंशे मुनिरभ्यगात्)॥ 'अद्वैत वेदान्त का मूल सिद्धान्त है प्रत्यभिन्न ब्रह्म की पारमार्थिक सत्ता और अनेकात्मक जगत को प्रमाणित करना वर्तमान में अनुभव होने पर यह स्वयं ही सिद्ध हो जाता है। इस विषय में 'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म ' इत्यादि श्रुति प्रमाण है। (अनेन जीवनात्मनाऽनुप्रविश्य नामरूपे व्याकरवाणि)।

(छांदोग्य उपनिषद)इस जीव रूप में अनुप्रवेश कर मैं नाम रूप की अभिव्यक्ति करूँ (तत्सृथ्वा तदेवानुप्राविशत्)इत्यादि श्रुतियों में ब्रह्म का ही जीवरूप से व्यपदेश है। 'नान्योऽतोऽस्तिइष्टा', 'नेह नानास्ति किंचन ' इत्यादि श्रुतियां भेद का अपवाद करती है। अतः उपाधि रहित जीव ब्रह्म ही है ,यही सिद्धान्त है। आचार्य शंकर ने अद्वैतवेदान्त सिद्धान्त के प्रतिपादन के लिए

भगवती श्रुतियों का आश्रय तो लिया ही है। परंतु उन्हे पुष्ट करने के लिए तथा अन्य मतो के निराकरण के लिए श्रुति,स्मृति अनुकुल तर्क का भी उपयोग किया है।

भारतीय ज्ञान परम्परा में श्रुति शब्द वेद,आगम और गुरु से प्राप्त ज्ञान के लिए प्रयुक्त हुआ है। श्रुति वैदिक ज्ञान की निरन्तर प्रवहणशील धारा को भी दर्शाती है। प्राचीन काल से ही ऋषिओं,महापुरुषों,गुरुओं और संत महात्माओं द्वारा ज्ञान का प्रचार- प्रसार मौखिक रूप से होता रहा है। व्यापक अर्थों में हमारी यह मौखिक परम्परा भी श्रुति कहलाती है। ज्ञान का प्रचार- प्रसार शब्दों के माध्यम से सम्भव हुआ है। ऋषिओं द्वारा प्रोक्त ये शब्द आप्त वचन माने जाते हैं। आप्त होने के कारण ही वेद भी श्रुति कहलाते हैं। वस्तुतः श्रुति का सीधा अर्थ शब्द प्रमाण है।भारतीय चिन्तन परम्परा के महानतम विद्वानों में एक आदि शंकराचार्य ने भी उपनिषद् को श्रुति अर्थात् शब्द प्रमाण माना है।

आदि शंकराचार्य के मत में श्रुति अद्वैत वेदान्त दर्शन में श्रुति को विशेष और स्वतन्त्र ज्ञान का स्त्रोत माना गया है। वाक् अर्थात् शब्द द्वारा प्रतिपत्ति कराने का साधन ही श्रुति है। जब शब्द द्वारा प्राप्त ज्ञान और प्रत्यक्ष तथा अनुमान द्वारा प्राप्त ज्ञान में विरोध न हो तभी उसे शब्दप्रमाण माना जाता है।

आचार्य शंकर ने शब्द प्रमाण के दो रूप माने हैं- श्रुति और स्मृति। मन्त्र और ब्राह्मण को सम्मिलित रूप से श्रुति कहा जाता है। मन्त्र 4 प्रकार के होते हैं- ऋग्वेद,यजुर्वेद,सामवेद और अथर्वागिरस। ब्राह्मण माने जाते हैं- इतिहास ,पुराण,विद्या,उपनिषद्,श्लोक,सूत्र,अनुव्याख्यान और अर्थवाद्। आचार्य शंकर का मत है कि अलौकिक वस्तु के ज्ञान का एकमात्र साधन श्रुति ही है। प्रत्यक्षादि दूसरे प्रमाण अलौकिक वस्तु का ज्ञान तो नहीं करा सकते हैं। रूप ,गुण आदि से विहीन होने के कारण अलौकिक वस्तु इन्द्रियों द्वारा नहीं जानी जा सकती है। ऋषि याज्ञवल्क्य ने भी उपनिषद् को ही ब्रह्मज्ञान का साधन माना है। वे कहते हैं ,(त्वौपनिषदम् पुरुषम् प्रच्छामि)

1. तस्मात् अविद्यायाम् मुख्यतय वृत्त्योपनिषच्चशब्दो वर्तते ग्रन्थे तो भाक्तेति- सम्बन्धभाष्य (कठोपनिषद्)

श्रीत शब्दजनितार्थ प्रतिपत्तौ श्रेयः (बृहदा. उप.शां. भा. 1/3/29) 3 न च प्रमाणं प्रमाणान्तिरेकेण विरुध्यते (बृहदा. उप. शां. भा. 2/1/29) + एवं मन्त्रब्राह्मणयोरेव ग्रहणम् (बृहदा. उप. शा. भा. 14/10) 5 श्रुतिश्च नः प्रमाणमतीन्द्रियार्थ विज्ञानोत्पत्ती (ब्रह्मसूत्र

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

शांकरभाष्य 2/3/1)एवं तस्माच्च शब्दमूल एवातीन्द्रियार्थ वाथात्म्याधिगमः (वहीं-2/1/27)रूपाद्यभावाद्धि नायमार्थः प्रत्यक्षगोचरः (बृ. उ. शांकरभाष्य 2/1/2)बृ.उ. 3/9/26

आचार्य शंकर के अनुसार अपौरुषेय होने से पुरुषकृत दोषों से रहित हैं। अतः आत्म हितेच्छु को श्रुतिप्रतिपादित अर्थ तथावत् ग्रहण कर लेना चाहिए। आचार्य शंकर के अनुसार श्रुत्यार्थ को तथावत् ग्रहण न करने में तथा वेदानुकूल साहित्य की प्रामाण्य अस्वीकृति में महान् दोष हैं।'धर्माधर्म के विषय में वेद जिस प्रकार परम प्रमाण स्वीकृत हैं। उसी प्रकार ब्रह्म के सम्बन्ध में भी उनका प्रामाण्य सर्वोपरि है। ' प्रत्यक्षादि प्रमाण भी जिस धर्म के प्रकाशन में असमर्थ हैं,श्रुति उसकी भी प्रकाशक है। जैसे श्रुति विरुद्धार्थ की कल्पना अन्याय ही है। अतः हमारा कथ्य शास्त्र प्रमाणक ही होना चाहिए। श्रुति प्रामाण्य की पराकाष्ठा को स्वीकारते हुए उन्होंने वेद विरुद्ध समस्त शास्त्रों को अनित्य अशुचि एवं दुःख का हेतु तथा पुरुषार्थ का असाधक माना है। इसके विपरीत वेदजन्यज्ञान का अतीत ,वर्तमान अथवा अनागत कालत्रय में न तो कभी किसी तार्किक के तर्क से स्थायी बाध हुआ है,न हो रहा है और न कभी होगा।

श्रुत्यार्थ के विषय में आचार्य शङ्कर की यह मान्यता अवश्य है कि यदि कहीं श्रुतियों में यत्किंचित् विरोध प्रतीत होता हो तो वहां गौण प्रधान भाव से उनका अर्थ सामंजस्य स्थापित कर लेना चाहिए इसी प्रकार यदि किसी स्थल पर श्रुत्यार्थ एवं लक्ष्यार्थ के सम्बन्ध में सन्देह हो जाए तो वहां श्रुति को प्रामाणिक मान लेना चाहिए। श्रुत्यभाव में लक्ष्यार्थ ही प्रामाणिक होगा। आचार्य शङ्कर को श्रुत्यनुसारी स्मृतियाँ ही मान्य हैं इतर उपेक्ष्य ही हैं। उनके अनुसार शास्त्र (श्रुति) विहित कुछ भी अकर्तव्य नहीं है क्योंकि शास्त्र तो परात्पर प्रामाण्य है।

श्रुतियों के महावाक्यों से भी आत्मा और ब्रह्म के स्वरूप का ज्ञान होता है। ये महावाक्य हैं-(प्रज्ञानं ब्रह्म)(ऐतरेयोपनिषद्) (अहं ब्रह्मास्मि)(बृहदा,उप.),(तत्त्वमसि)(छांदोग्य उप)(अयमात्मा ब्रह्म)(माण्डूक्य उप)। धर्म और अधर्म का बोध भी श्रुति द्वारा ही प्राप्त होता है।

श्रुति के अतिरिक्त धर्माधर्म का ज्ञान किसी दूसरी वस्तु से नहीं हो सकता है। इसीलिए अलौकिक ज्ञान श्रुति या शास्त्र पर ही निर्भर होता है। आचार्य शंकर के मत में श्रुति स्वतः प्रामाण्य पर आधारित होती है। यह ब्रह्म से निःश्वास के समान प्रकट होती है।आचार्य शंकर का मानना है कि श्रुति नित्य है लेकिन प्रत्येक युगारम्भ में यह पुनः प्रकट होती है। इसके पक्ष में निम्नलिखित प्रमाण दिए जा सकते हैं श्रुति नित्य है क्योंकि यह जगत का कारण हैब्रह्म ने 'भू' शब्द का व्याहार करते हुए भूमि का सृजन किया।श्रुति नित्य है क्योंकि शब्द से जाति

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

और आकृति का ज्ञान होता है न कि व्यक्ति का।आकृति और जाति नित्य हैं इसीलिए श्रुति भी नित्य है। जब कोई व्यक्ति गौ-। गौ 'गौ'.ऐसा उच्चारण करता है तो ऐसा नहीं कहते कि तीन 'गौ' बोला अपितु वह तीन बार 'गौ' शब्द बोला।श्रुति नित्य है क्योंकि यह ठीक वैसी ही है जैसी पिछले युग में थीश्रुति नित्य है क्योंकि इसका कोई स्वतन्त्र लेखक नहीं है।प्रजापति ने युगादि में अपनी बुद्धि से इसे अभिव्यक्त किया। वह अद्वैतमतवादी वेदमतानुयायी पक्षधर पारखीनिष्णात निन्दन्ति वेदविद्यांच द्विजाः कर्माणि वै कलौ ,कलौ देवो महादेवः शंकरो नीललाहितः प्रकाशते प्रतिष्ठार्थ धर्मस्यविकृताकृतिः ,येतं विप्रा निषेन्यन्ते येन केनापि शंकरम्।।

लिंगपुराणानुसार।। निर्विकल्पक तथा निरूपाधिक तथा निर्विकार सत्ता का नाम ब्रह्मा हैं। श्रुति में विस्तृत व्याख्या अनुवाख्यान विषय मंडित रहा हैं। अयं धर्मोऽयमधर्मः इति शाखमेव विज्ञाने कारणम् (ब्रह्मसूत्र शां. भा. 3/1/25)9 प्रत्यक्ष श्रुतिः। प्रामाण्य प्रत्यनपेक्षत्वात् (ब्र.सू.शा. भा.2/3/38)

लीलान्यायेन पुरुषनिःश्वासवद्वयस्मानाहतो भूताअद्योनेः सम्भवः (वहीं- 1 / 1 / 3) 11 अतएव हि वैदिकात् शब्दात् देवादिकम् जगत् प्रभवति।(वहीं 1/3/28) 12 तथा च श्रुतिः स भूरिति व्याहरत भूमिमसृजत (तित्तिरीय ना. 2/2/4/2) 13 आकृतिभिन्न शब्दानां सम्बन्धः न व्यक्तिभिः (ब्र.मू.शा. भा. 1/3/28)१५ द्विर्गो शब्द उच्चरित इति हि प्रतिपत्तिः न तु द्वी गोशब्दावाविति (वहीं) ब्रह्मसूत्र शांकरभाष्य (1/3/30) 16 स्वातंत्र्यस्य कर्तुरस्मणादिभिः स्थिते वेदस्य नित्यत्त्वे (ब्रह्मसूत्र शांकरभाष्य- 1/3/29)आचार्य शंकर सदा ही पक्षधर श्रुत्यानुगत,तर्कानुगत एवं शिष्ठकर्मठता को विशिष्ठा प्रदान करते रहे हैं। पारमार्थिक सत्ता के अन्तर्गत निर्गुण ब्रह्मा के आकार का चिन्तन करते हैं। श्रुति ने इस जगत की उत्पति ,स्थिति और लय का विषय दिया ठीक उसी प्रकार से वही जन्म स्थिति और लय कहे जाते हैं। श्रुति का कथन हैं,अनुमान में व्याप्ति दो द्रष्ट वस्तुओं के मध्य स्थित हैं। ईश्वर को अनुमान से सिद्ध नहीं किया जा सकता कारण संबन्ध में व्यक्ति की स्थापना नहीं की जा सकती।

आचार्य शंकर कहते हैं कि श्रुति में तर्क से विरोध नही हैं ,सत्यता का एक अतिरिक्त आधार यह भी हैं कि अनुभव सिद्ध कथन हैं। जो श्रुति का कथन हैं ,वे तर्क के द्वारा भी समर्थित हैं। इसलिए शकराचार्य के अनुसार ब्रह्म के संबन्ध में था कि अनुमान से कुछ नही जाना जा सकता हैं। प्रयोगार्थ हम इसे श्रुति के सहायक के रूप में प्रयोग कर सकते हैं। कुछ जो अनुमान

श्रुति का समर्थन करते हैं ,वह सार्थक रूप श्रेणी में आ जाये परन्तु जो विरोध पक्ष हैं वह तो निरर्थक हैं। आचार्य शंकर निर्देश करते है कि श्रुतियों में जन जन पर ब्रह्मा के अर्थ में आनन्द एवं आनन्दमय शब्द का प्रयोग हुआ हैं। वह व्यापकता के आधार को संकुचित कर देता हैं ,वह जो स्वयं को स्वयं में ही जान पाने में सक्षम हैं। वह किस प्रकार के विषयों का विषयगत ज्ञान हो पाये यह कहना असम्भवमात्र प्रतीत होता हैं। व्यावहारिक जीवन में मानव की समस्त समस्याओं का समाधान मोक्ष हैं। यही शंकर के दर्शन की सर्वोच्य अवस्था हैं। श्रुति की वास्तविक धरातल पर उपलब्धि एवं पूर्णता प्राप्ति का प्रयास ही साधना का वास्तविक रूप हैं।

आचार्य शंकर की दृष्टि में ब्रह्म ही एकमात्र परमार्थ सत्य है ,शेष समस्त जगत् समस्त लोक उसी में अधिष्ठित हैं। अतः शुभ्वादि का आयतन (आश्रय) भी ब्रह्म है। इस पर अनेक श्रुतियां भी प्रमाण है। सर्वप्रथम वे कहते हैं कि मुक्तजीव ब्रह्म को प्राप्त होते हैं ,ऐसा श्रुति में वर्णन है। जीवों के बन्धन का एकमात्र कारण है

"अविद्या के कारण अनात्मतत्त्व देहादि में आत्म- बुद्धि होना "। इसी अज्ञान से शरीर के प्रति राग हो जाता है। तत्परिणाम स्वरूप शरीर के परिभव अथवा तिरस्कारादि से द्वेष उत्पन्न होता है , शरीर का नाशादि देखने से भय एवं मोह की उत्पत्ति होती है। इस प्रकार जीवानेकानेक अनर्थस्वरूप जग त बन्धन में बंधता है। इसके विपरीत जब उसे अपने वास्तविक स्वरूप का ज्ञान हो जाता है तो उसके समस्त सांसारिक बन्धन निरस्त हो जाते हैं।

वह अमरत्व को प्राप्त होता है।(ओंकार एवेदं सर्वम्)(छांदोग्य उपनिषद हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः। " क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन दृष्टे परावरे (मु उप)

उपसंहार

इस प्रकार उपयुक्त कथन से यह स्पष्ट है। कि भारतीय दर्शन शास्त्र में ब्रह्मसूत्र को सर्वोपरी ग्रंथ माना गया है। आदि शंकराचार्य जिन्होंने अल्प आयु में ही अनेक भाष्यों की रचना कर जगत को एक नयी दृष्टि प्रदान की तथा साथ ही चार मठों की स्थापना की जो वर्तमान मै अत्यंत प्रसिद्ध है।वास्तव में आचार्य शंकर के द्वारा किये गये प्रत्येक भाष्य तथा उनके द्वारा की गयी चार कोनो मेंचार मठों की स्थापना आज भी भारत वर्ष में प्रचलित तो है ही किन्तु यह आज प्रत्येक मनुष्य के लिए स्मरणिय तथा प्रेरणा का स्रोत है।आचार्य शंकर ने अपने

समस्त भाष्यों में श्रुतिप्रामाण्य को अन्य स्मृति ,युक्ति,पुराणादि समस्त प्रमाणों से सबल एवं स्वतन्त्र प्रमाण माना है।

सन्दर्भः

1. श्रीतशब्दजनितार्थप्रतिपत्तौश्रेयः(बृहदा.उप.शां.भा.1/3/20)
2. नचप्रमाणंप्रमाणान्तिरेकेणविरुध्यते(बृहदा.उप.शां.भा.2/1/20)
3. एवंमन्त्रब्राह्मणयोरेवग्रहणम्(बृहदा.उप.शा.भा.14/10)
4. श्रुतिश्चनःप्रमाणमतीन्द्रियार्थविज्ञानोत्पत्ती(ब्रह्मसूत्रशांकरभाष्य2/3/1)
5. एवंतस्माच्चशब्दमूलएवातीन्द्रियार्थवाथात्म्याधिगमः(वहीं- 2/1/27)
6. रूपाद्यभावाद्धिनायमार्थःप्रत्यक्षगोचरः(बृ.उ. शांकरभाष्य2/1/2)
7. बृ.उ. 3/9/2ृरीतशब्दजनितार्थप्रतिपत्तौश्रेयः(बृहदा.उप.शां.भा.1/3/20)

सं◌दर्भ ग्रंथ सूची

1. शुक्ल,बद्रिनाथ, व्याख्याकार,2005,वेदांतसार,मंगलाप्रकाशन
2. ध्वरीन्द्र,धर्मराजा2001,वेदांतपरिभाषा,चौखम्बासुरभारतीप्रकाशन
3. शर्मालेखराम,प्रथमसंस्करण1995, आचार्यशंकरभाष्यपद्धति,इन्दुप्रकाशन,दिल्लीशक्तिनगर
4. सरस्वती, स्वामीसत्यानन्द2013, ब्रह्मसूत्रशांकरभाष्य,सत्यानंदीदीपिका,(व्याख्याकार) सरस्वती,स्वामीसत्यानंद,चौखम्बासुरभारतीप्रकाशन